

ASUA ARCHIVES

2870



ॐ ॥ नमामि १ वागीश्वर सयत्रम निददया १ विलासि विरूपाक्षमनादय  
सयत्रम निददया ॥ ॥ पीतनीत्रावृणोतीतवयन १ पंचविनमकूटमनिलय  
ना ॥ ॥ धर्मचक्रमूलाकूटि १ सि १ यथावापयिष ह्यस्तुतत्त्वना ॥ ॥  
सनासूत्रनमिगत्रवत्त १ रुद्रगिपत्रमादि वक्तु न गुणलयन ॥ ॥ ॐ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

त्रवि॥ मायामयं हामनि कनक वाजिपुष्पादिदहज्जम्बूदीपाश्चपत्रग  
मयानि दहज्जम्बूदीपाश्चपत्रगमयानि पंचवर्षपञ्च जिनव्यापि यात्र॥ ॐ ॥ नमो पंचवर्ष  
विश्वसृजिग, विश्वदिग, विश्वरुग, पञ्चसूत्र नि २ अक्षदिपात्रव वदति जिनमा  
नसा हयकुसुममिषयनघात्रपुष्पं॥ ॥ जातवदन्यम, यादजदिपं  
वाडपदिपविजाकुष्मा न १ हय नवा डपदीप वडविदिगरु वन, वाडपदीप  
शीखरुपत्रयु॥ ॥ दिवदवत्र पात्रियनववृधित्रयात्रियसफ



अक्षदत्रचवियात्र१ अक्षत्राडदिचियसायकंनका मतिक्लत्रिधिनिशि  
लवदयति ॥ ॥ शुचत्रातिवत्रमागतिपत्रिगावता मनकप्रम

ददकयप्रिसंप्रियूजा १ पदविप्रिहात्रप्रिसफप्रवियूप्रिमा गवकुलनि  
प्रिसंगवदा मरुहगं ॥ ॥ २०६ ॥ ॥ १ वागरेववि ॥ निर्मानादि च

दुष्पट्टिदत्रमत्रावद माध्वगणनादिष्टगनादद्रूषी १ समीवयवितलादिगाह  
गाहिननिनवनिप्रस गापन्नश्चद्रूपी ॥ ध्रु ॥ ॥ दंनमाप्तिदवी श्रीवकाविशामि

नीतिप्रदसुखद विलासममरुतद्वली १ सदिद्यानपूषुगिबि कामद्रूपगीद



॥ ३३ ॥ वेदेषु धर्मेषु निश्चयः ॥

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ ३३ ॥



[illegible]

॥ ५२॥



॥ पृष्ठद्वयगतं यक्षव

॥ वायूव्योमो हिनीदवीशी

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ चतुर्हज्ज

卷之四

(K)

सावे, तत्त्वस्वरूपवलि सावे॥ ४३ ॥ खखे, खादिश वलि पूत्रल, घघ घादय १



प्रतिपद

विषय २ पक्ष मियात्र पक्ष मावित्र पक्ष हान मध्विना ॥

॥ सर्वयज्ञा

रुम रूत पुनमिमा वात्मादापसात्र २ अ कज किनी इयि अहमसात्र कूम

अहमसात्र कूम

लिग द्रुनु पीव रुत्र ॥

॥ दानपति सर्वकार्य तत्वया सर्वसुखसंपत्ति व वि

त्र २ आसंसात्राग कव यत्र सर्वसुखसंपत्ति ॥ कित्र ॥

॥ समयत्र कंड

दानपतित्र सर्वसिद्धिसंपद ॥ कित्र २ अथेव गथेवं रुं ऊथ पी वथ डि वथ मारु क मथ

त्र ॥

॥ २००

॥ त्राम एवमं ऊं नि ॥ अनिल अनल जल आ रुव मा अथ २

मत्र ३ न च कवाया २ व ऊपं जल व आ ल संपत्ति रु वि म व म ल च कवाया



ॐ ॥ उमन् कृत्वा ॐ या ॥ मन्त्राकाराणि आलिङ्गता दत्तवन् कृत्वा ॐ या ॥ वज्रवाचादि  
आलिङ्गता समन्त्र कृत्वा ॐ या ॥ ॥ कृष्णि संविद्य वीर्यवत् स ऊहि ऊहि गहि ग  
हि अक्षुडाममन्त्र १ अन्न रुग्ण सर्वद्वन्द्व कृष्ण उग दवी मिलितिय गय न संदा  
वा ॥ ॥ शिरूवन रुक्म ए कला यन राता ॥ शिरूवन रुक्म ए कवी ववी  
वा १ मिनि रूवन न वना ८ सं प्रसा वित्र रुलिं एगव ए का कात्रा ॥ ॥  
अहिनि मिता न गुप्ता वान रुक्मा (ग क्कादि (गल राव अराव १ उन्म स न वरा  
यवन्वन क्कादि (गल राय मात्र अगिय संदा वा ॥ ॥ ॐ ॥







ॐ  
ॐ  
ॐ

ददा आलिंगाण आगधन २ वज्रघृष्टमूलाधन ॥

॥ धवत्रयसंखन

दरुधन २ सत्रयसंखन चन्द्रमन ॥

॥ मायादह विनजंयु २ सा

हिय कनूण सखमहं ॥

॥ ॐ ॥

॥ राग मनीषमात्रमि ॥ चित्र

कनविशमि मणुलमाभ्य धिनि आनन्द मन्त्रिधन २ वज्रवात्रादि आलिंग

मन्त्रवा नानात्रमिमहाकन ॥

॥ गं नाहं हं गं नाहं हं २ गं नाहं गं

हं हं हं ॥

॥ नीलवर्ण चतुर्वर्ण पणिमख विनय पत्रमा आनन्द

मन्त्रिधन २ विश्ववज्रमूलाधन चन्द्रमणुलमाभ्य धिनि आनन्द मन्त्रिधन २ विश्ववज्रमूलाधन चन्द्रमणुलमाभ्य धिनि आनन्द



ना॥ ॥ वज्रघट गज चर्म उमचूखपांग विनमा आनन्द मव निधना  
 २ कत्रनिक पाल पत्रशु पात किशू लवका मित्र धरा व्याघ्र चर्म कति वस्त्रिगा॥  
 ॥ दिगा विदिग काका रक्षादि उमदा किनी दवी सहजा आनन्द मव  
 निधना २ नमामि २ श्री चक्र सन्ध्या गणगुपच वली आया धिगा॥  
 ॥ १ वाग अरुति ॥ रुउ आरु वली क्रियायि च सन्ध्या धनयिक वावि  
 चवासा २ उक्त वाचनं मलि यामसा न सकुट कं मा दिगम्वना॥ ७३ ॥



प्रमात्र सम्वत्त्राया सम्वत्सुन्दरी भाव कात्रा १६ मविवाहित्र व  
जवात्रादि रु उ मदित्र भाव सादा ॥ ॥ अत्रिगायन वद मद्र मयन  
कर्ष्य वरुवयिगं वात्रा १ गगलनित्रा वरु वदित्र आदा मत्र मद्रु लरुव विना  
॥ ॥ डियं ध उषा गद्रु कादि (गत्र सम्वत्त्र पयि मयि मय नगात्रा १६  
मविवाहिनी वरुवात्रादि रुद्र विरुद्र मयि मय नगात्रा १६  
लीला वरु आत्रियावत्र गग गुव वरुद्र आत्रा ध १६ मया आनन्द रुद्रि



क  
७  
३

लग्नमथल, सम्वत्रवजवात्रादि ॥

॥ ॐ ॥ १ वागकनदि ॥

मिहंदाचापयिथागिनीदरुकवादि १ कमलकुलिगघृकलकूनवि  
यात्र ॥ ॥ आगिनीकुम्भविष्णुखनकूनजीवयि २ गात्रामूह

चंवि यात्र, कमलसंप्रीवयि ॥

॥ रूपकूयागिनीत्रपनआयि

१ मलिकूलवहियात्र, उदियानसमायि ॥

॥ सासुहस्यत्र

यात्र, कात्रियगात्र १ वन्दसूर्यदयिपकूनरुवाआ ॥

॥ र



वि. ३०  
वि

नयि गुणुत्री रुम कूंदू वी वा १ नयय ना वि मा भ्य डरुय ड वि वा ॥ ह  
॥ ॐ ॥ १ वा ग ग न्ध व र वि ॥ वि वि ह वि ह न न मा व वि ग मि  
व द ना १ द वान न व अ स व ग ल र व न ह रु क व ल ॥ ५ ॥ ना च व  
न मा मि श्री स म व वी वा १ व ज आ गि नी व नि व स ह ज ग न्ध वा ॥ ६  
॥ व ज वा वा दि आ लि ग ल क ॥ ७ १ ह रि र्म वी य स्व व स म व स वी वा ॥  
॥ वा गा ह द ह न वि मू मा स सु र ह र्म १ क व ल व ल ग न ला य

(१२)



उत्तिगा

नरिष्यत् ॥

॥ द्वादशरुज धाविचाविचडवदना १ निवः

सहाव गगलकुशलिना ॥

॥ १ वागविनास ॥ उदिगागवलेया

प्रवतप्रधूना १ वतंसददामककासमलिना ॥

ध

॥ द्वात्रिंशद्व

रुवाचिर्मगत्रिना १ अखयनिर्जर्जन मादृशना ॥

॥ दिनकव

मउलमध्वगगा १ कवृणमृगवस एवकृणा ॥

॥ दग्ध आ

निरुवपकिनिदन्ता १ देवा अ सुवनच गिचं नमिगा ॥

॥



ॐ नमो

नमो वक्रिपवनपविशुचूरुगता १ वज्रवात्रादि उडुगिनीनमिता ॥  
॥ ॐ ॥ १ वाग मधुमग ॥ जयवाक्कलि रुचूवद्यवयि  
१ सयत्रसु वासुत्रज गगडध्ववली ॥ ॥ १ रुगवगिपाइ काः  
मनमहिमगुल श्रीपुलवली मनकात्रा १ हाउ आरुत्रल विरुषिग  
मंखव घु डलाला गिनितिनिति गिनयनी गिनितयना ॥  
कात्रगिषर्षत्र गीधवदनवमित्रमात्रा १ कखिरव धीगवत्रमकुडकभा



ॐ विष्णवे नमः

॥ शिवसिंधुः, कंजसुहृन्वा १ कच्छुविकर्पवतं वाचसखसावी  
॥ रुतयिप्रवगवः, वाक्कविदासा १ श्रीवज्रदवीपसादा, श्री  
हृन्वपाया ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ २ बागकाभाद ॥ कं विजसंरुव, ख  
समददा नववमहाशिं गगलकलधवा १ द्वादशरुजा, वदवदना, द्वाद  
शवर्गव, वकनर्ग ॥ ॐ ॥ नमामि श्रीगिरिकेश्वरं १ मात्ररुय, रु  
वरुयद्वली ॥ ॥ चतुर्विंशति पी ॥ ० ॥ श्वत्रं कृतिर्नवीनवीयश्व  
वी १ चतुचक्रपदक्षिणि, प्रविष्टगा, दवीसंपूर्ण, पद्मलिगहिणा ॥



अवनिनिदिन जा न

पद्मसंपूर्ण आलिकालि पदाकांक्षा अगिस्तन्यत्राश्वा दमदवी न  
कलावा नमामि श्रीचक्रसम्बन्धना ॥ ॥ गगनगुप्तचक्राणि मित्रांगधा  
र्यो रत्नयिर्मगीत श्रीकूलिम्भ १ दानपतित्र सनादुर्ध्व सद्यससुल आ  
वा धिता ॥ ॥ ॐ ॥ १ बाग काभाद ॥ अवनिनिदिन जा  
नू नीलसमदला १ ककल चित्तयन शीघ्रम वदना ॥ ॥ गना  
कंकं गना कंकं जाग अचल का धवाया ॥ ॥ निविदिन घन द  
कि ॥ अरिग संग १ पाशखञ्ज क्षत्री गिरुवनना था ॥ ॥ हवि



शुक्लनिनिदिनको

हृन् वक्रां न्य च डमा ला १ मात्र विद्युत्प्रगिष्ठा रु गयद वल्ल ॥

॥ विविधिवत्तमो विप्रं कृतं दत्ता १ अगग वांक्किग वल्ल रु लदा यकं ॥

॥ ॐ ॥ १ वाग का भा दं ॥ अवनिनिदिन वास जान् एव ॥

कि वल्ल मात्र सं जा ॥ १ वाग दष मा रु वधि व पा ॥ पि उ व न वा या ॥

च व वी वा ॥ ६ ॥ न मा मि शी व उ म रु वा मि ल्ल ॥ जा ग म रु फ

॥ स रु दि ना १ विश्व नाथ ॥ विश्व व्या पित वी व वि काम म रु आ ध वा या ॥

॥ मा मि शी म न ग ॥ ७ ॥ प रु उ ॥ ८ ॥ क लाल ॥ विद्युत् कि व ल्ल १ पी







ऊगकनाथऊगकपालिक, मरुकाधवाया ॥

॥ अवनित्तिदिगवाम

आन, धाववदन शिलाचना १ कंकसादर वरयंकव अखिलविष्णुका

॥ ॥ अक्रुद्विद्वमद्यमायादर्पादसनसुवीना १ दङ्गानिष्पीडि

गधन सद्य किप्रदीष्ट प्ररुका ॥

॥ विविधिवत्ना आरवणविरह

षिक दिवावत्नसु मोदी १ ऊगकवांद्धि कसर्वसंपरि सिद्धिरुलदायक

॥ ॐ ॥

॥ १ वाग, स्वर्ग ॥ वासवर्षत्र, दहिन कत्रनि १ पाय



नोपूत्रवृक्षमात्रद्विगा ॥

६३

॥ दवीनात्रेवकजटिवज्ज

गिना १ शिनिनं दवी शिरुवनपयिमा ॥

॥ कालमृत्पदयि

पागनवधिगा १ यागद्वषमाहकवगिन कृदिगा ॥

॥ श्रव

मृक्षदवी निवज्जदवी १ मृत्पाणदवी मृत्पदवा ॥

मृष्टिसंलावदवी कवृक्षकदवी १ माहमागदवी मविगजननी ॥

॥ १ याग गवउगी ॥ चक्रिकुलकठिवाचक मखलरुषिग

॥ ५ ॥ ३ ॥ ३ ॥



गीतबूडनवशिखमाला २ शिखचक्रिचक्रियिया रुसविधूविक गगलकगादि वं  
धूविया या ॥ ॐ ॥ परसशीहूवूडाद भावूकोवा या इगनाथ शीसम्बववा  
या ॥ ॥ वज्रकवाटकहा (थधविया क (धु क्रिया डखदांग २ संपूटजागि  
नी कमलविहासिं (गत्र महामख मवि पसा द ॥ ॥ वज्रवा या हिआलि  
गत संपव नाचयिवरुविरुवरुं (ग २ वाकृत्रिकोवयिया कीठकि हूवव  
अर्धरु वसु वन पसा द ॥ ॥ सरुजस वृहिवयिया गाव नि कलु



श्री हनुमत् वचन पसाद २ पद्म आलिंगन की दत्ति हनुमत् विलास यि मू  
 न्य कवल्म ॥ ॥ ॐ ॥ १२ गगन गुजलि ॥ जय जय वाङ्मय त्रिसय  
 वसुधा स्वामी २ अख यदख यमंदा वनि ॥ ६२ ॥ वल मूनं अन्नदा २  
 हूँ हूँ कावना वयि मावनि ववा वलि ॥ ॥ जिन पत्र या निदहा पत्र  
 व २ जिन ऊन निवृप वज्र आगिनी ॥ ॥ जय जय श्री द. राम शा  
 नथीय २ श्री वन्द नव मित्र मावा ॥ ॥ जय जय हा जय वल स



॥ सा २ कत्रगिकपात्र खर्वांगधारी ॥

॥ जयजयं वा खर्वांग ॥

गकसंसात्र २ पुढा मा मि अद्वय वाक्करी ॥

वा ॥ ॐ ॥ वा

१ वागदंसात्र ॥ माया जाल विंशु सहस्रगरीत्रा २ माह मानदर्पकादि

त्र नित्र आसा ॥

॥

॥ एतंसात्र असा वा २ वागदंष माह कादि त्रः

नित्र आसा ॥

॥ अन मि खन यन दृढ कत्र विय २ उन्म सवीचि

॥ इष्टत्र पुन्यद ॥

॥ सहज संसावनय उदना गगधत्रिया २



नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ अत्र धृष्टा उदयत्रय पायपसा

दा १ गात्रकिनि दूरवपाप रुवचक गात्रिवा ॥

॥ ॐ ॥

रागागशाक्षररुवरी ॥ तिरुवनकालिकमूत्रमिअनलायनविनयवति ॥

ॐ ॥ नाचयि वज्रमख पत्रमध्वन श्रीनवति ॥

॥ वडिसे स

रुसुकित्रलदशसूर्यसादसुवती ॥

॥ वक्रविहवृषविमदअ

नूवायनसखवति ॥

॥ ॐ ॥

॥ १ नागललिता ॥ अनुरु



न मथ गावं काव सं गावं च न रूप चिकित विविश कलशं २ उं आ ४ रुं काव  
 वज्राम तमदकं सर्व जिर्वजिन व्यापि तम रुज कलशं ॥ ध्रु ॥ चन्द्राम  
 तत्रा वाधिरुल दायकं सर्वजिन व्यापि तम रुज कलशं २ जग तम लक्ष्म  
 धि तमून्यक वृक्ष इव सं साव नाशन विव रुच्युपी ॥ ॥ वज्रपत्र मा  
 नमय गन्धं वसं यक शंख सं लक्ष्म धि तम पंचपीयूखं २ रुं काव तम रुपुष्टि शगव  
 न्धन वज्र सं स्मृ पि तम विपाक कलशं ॥ ॥ द्यु तम लक्ष्म तम सफ रूप



॥ व आशु मन्दा कि निजल रूपं २ मटि नि साधन न दवना चकं ह्मन स  
 वमानिय द्द डीऊ कि न ॥ पायादि आच मन दान पृथ पृथ सत्र सम या  
 चक य व शिर्ग विमल कल शी महा वाग द विरूप वा धि चि रु रूप समय स  
 व ह्मन चक उ कीरु मं ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ १ वाग रु वी ॥ ग उ  
 जि न ड र्द हा थ ध्रिया कमल कलि श अ ग वा वि २ उ म व क न गि क ना  
 व शि मूला वाम ख द्वा ग क पाल ध वा ॥ ॥ ॥ श्री सच्च व वा या वा क्क वि



ॐ शुक्रं जंगुलिना १ मात्र विप्रचापयि यात्र. माया सा सखन्दु मूडा सिद्धिदा ॥  
॥ पाशो वृक्ष मण्डल, वामहाथ ध्वजिया डनत्र मित्रमात्रा २ नीच  
रुचिगलाहिग कनकारु चडमुख अकि विकलाल धवा ॥ ॥ अग्नि  
रुपदओ रं वव चापयि याल, कालि त्रा वि दिन मूडा २ विश्व कूलिग अर्ध  
वन्दु जगदशक, वायु चर्म मण्डल ॥ ॥ कृति मंवी ववी वध्वनाय  
कमिनि चर्क महावीर वीवा २ कदली गाय वी ववी वध्वन, उं ऊयि सयत्र मं



वधवा ॥

॥ २०५ ॥

॥ वागर्हत्रवि ॥ अष्टकृष्णपात्र, दिगविस्

दिगुवन, धंशीय मात्रच उत्रश (ग १ गगलमखत्रगगनवत्तमनका वा. ग

गलदा मात्र वज्रघृवाजियात्र ॥

॥

॥ ईं ईं न मामिपच जकि

नीपंचशगति ह्मानाकिनी सत्रलश (गगा ॥

॥ पूर्वदलुत्रप

श्चिमदकिताचदुर्वन, विश्वमात्रविश्वखंदियात्र १ आकिनी दीपिनीचद

सिकवाजनी धाववगाव संशासवदनी ॥

॥ सिंधिनिव्याधि



विषय

नीजं वृकडला किनी खदांग पत्र गुर्गुग दला १ वरु जा किनी धात्र व  
तात्र जा किनी च अल जा किनी च उत्र दंवी ॥ ॥ जिन जन नि  
दवी जा किनी दुर्ग पाय मत्र दम धं च मद्रा रत्र द विरु पिता १ ख उग दं ठ  
क व ऊर्घ थ खदांग पात्र पत्र मध्वरी ह्यान दंवी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
१ राग ललिता ॥ विषय विषय विरु पवन मंजा (ग) जात्र यि दं नु दिना रि  
क मत्र १ दह यि जिन विरु मगि मत्र यि रं ग जिन निनि आसा मय धाम



सयनी ॥ ॐ ॥ नमो नमो ध्यायः कालवक्रः हवः समस्त विस्वतृपः  
२ पयिपदमसंजा (गमंरुवनिमक न सह जान आ नन्य मयज्ञानतृप ॥  
॥ वक्रपय्यक्षमनक क्षमावृत्त गन नामसंगीति अक्षायध्वानं १ ज  
गत् ४ खनामनं वाधिरुलदायकं आगज नम मावृत्ताव विनी ॥  
गुन वाक्चदृध्रिया अर्धपवनक विन्य मलिमकू चन्द्र उगा जीध्रिया  
१ चदृध्रिया नम विनपत्रमंभव सूर्यरुवन खत्रवात्रा हवनी ॥ ६



॥ स्वप्नमायासदृशतावपि तावता, ब्रह्मधर्मसंघशत्रुतागमिष्या २ गु  
 वृचत्रय शिष्यध्विया, गावन्ति सूत्रावज, जन्मजन्ममात्र, ब्रह्मशत्रुतां ॥  
 ॐ ॥ १ वाग, ललिता ॥ अत्रपचन, श्रीमश्रुकुमात्रा २ शशध्वत्र कित्रुतासंका  
 शदहा ॥ ॐ ॥ ॥ दव श्रीमश्रुधाषंरुवनवा पिता २ नीरु खभदहिनक  
 वधायीता ॥ ॥ वामपुरुकध्वत्र, सूत्रगुत्रवाया २ पप्रपकाशकासदहा  
 ॥ ॥ दहिनवामकध्वनू शत्रुध्वत्रिश्चुत्रमात्रदर्पवानपुत्रा ॥ ६



॥ मंजुनाथ ॥

नमो वदन

॥ ॐ नमो नमो पात्र नाथ प्रमृदिगह दया ॥ अस्मिन्मकरुलवप्रसादा ॥

॥ ॐ ॥ वागवदनदि ॥ श्रीमंजुनाथवचमहास्त्रिनविजया ॥ चन्द्रहासखञ्जध्वनिना

गवासकदस्तु ॥ ॥ नमामि ॥ श्रीमंजुनाथ ॥ जगदीश्वरजगत्पुत्र

स्ववन्ध्यापिना ॥ ॥ पूरकध्वनीगुरु ॥ पत्रमगुवनाया ॥ श्रीधर्मध्वनस्तु न

नमालमं गुललक्षणा ॥ ॥ जगन्नाथजगन्निर्वाकननाया ॥ सर्वभूत

विन्द ॥ पण्डितनिर्वाकना ॥ ॥ ॐ ॥ वागमन्त्राद ॥ नमो वदन ॥



कमलविकाराणि

वत्समकूटआलंकारा २ चतुर्दशरात्रपूरकसत्रधनधात्रि॥ १ ॥ न  
सामि मंडरी पद्मनखधवा २ सयत्रआसापत्रिपूत्रिग ३ ध्वनिगा॥  
दहिनशी गालपति वामशी महाकात्रा २ सगता मधुलमाप्य पक्षलिगस्थिता॥ १  
॥ मृष्टिसंहाराया विष्वविया पिता २ अक्षराय वरुवाधि इतिगद्व  
ना॥ ॥ वज्रधनपसादीय दासकनयिया २ गुचववतामात्रुसिद्धि  
वदपसादा॥ ॥ ॥ ॥ रागनिववद ॥ कमलविकाराणि  
॥ मृदप्रियवदनममदेहा २ चतुर्वदन सुवल्लयदन पद्मनखपकाशि



॥ नमामि शशी महासंज्ञी सकलगुणनायकसुवृक्षकमति  
दहनरूपानववपुदः सर्वरूपान निधियात्रिणा ॥ पथमकवद य  
वज्रयक्षधनमदागालिगली विनाजिना २ द्वितीयं कर्मधनरुणी यज्ञान  
पुरुकचतुर्थवर्गसर्ववधना ॥ इत्युक्तपाशुवनधर्मवा  
पचतुर्थवामधनपुरुका २ बलमकृष्णी पुरुलिता कि विषकर्मधन  
वीवना ॥ निर्वृद्धिवृद्धिहायित्री मित्रसागिना सर्वरूपानविष्



म  
शु  
वि  
प

यसागना १ नद्रुसवन सवनागत पत्रमानन्यवज्जन्मन ॥

॥ ३३ ॥

॥ वागवर्षगा ॥ मधुविपूषिपूवां इयनिद्रुनावा १ सकलदववन्दिगपादी ॥

॥ ॥ मेगीआदिवृद्धं श्रीमश्रुक्रमावा १ त्वंशुविवन्दिगपमनरत्य

स्वयं ॥ ॥ कृंकृमवृविवां स्रवविंनविषमा १ शून्यागकीत्रकवृत्तः

विह्वलां ॥ ॥ विषयविषमकूवपात्रंगमनस १ विम्यविवापिग

शीर्यं गुवृस्वयंरु ॥ ॥ मकगुव पत्रमादि विन्दूआवा १ गार्व



नमामि१ जिन धर्मो ॐ ७

किं न वगीन पदाव कूलिम् ॥

॥ ३३३ ॥ १२ वागनाट ॥ नमामि १

जिन धर्मो धातु स्वयं रु १ गिरु वन अनुरुध धर्म धातु वागी ध्वत्र ॥ ॐ

॥ नमामि १ जिन पंच जिन न भातु १ दशरुमि द्वा गिंश गम हासु खत्राया

॥ ॥ स्वर्ग मध पातात्र रुव न श्री कापा गत्र १ नुच डत्र न ग मि म

हासु न्यायाया ॥ धर्म श्री मि १ ज्ञान श्री मि १ दहि न रुकु ख ज्ञान धत्र धत्रा

॥ श्री ला क धत्र म धु ल म हासु खत्राया १ नाजा धि य ऊ पी न व







अखयनिर्वंजन

सद्विशिष्टवद्वयनिकं १ इति गरुवन सर्वपापकुर्यं कत्र दानपूष्य  
रुभाक्षपदा ॥ ॥ नमामि १ धर्मधरा वागीश्वर पाठशइवा  
त्रयत्रिमूर्तिना १ पाठश भावला मूनमूनकावा सर्वदवपत्रिसंस्ति ना ॥  
॥ नमामि १ वागीश्वर मलुल पद्मगिनिनि वाशिना १ सत्ववि  
माहिना १ खविना १ न पलमा मिडितचक्रधरा ॥ ॥ ॐ ॥  
१ वागनिवद ॥ अखयनिर्वंजन अखयमून पद्मगगन कमलजसाध



ना २ १२ न्याता विवाहित नाय १ चिन्नादव पात विंद स मजा ठि ना॥

॥ नमासि निवात्रं रती वा क्रव ख ताव हं तु रू व ल र्म पा पि ना २ स व द च नु स

म गे उप का गि ग ज ल ज च नु स म वा पि ना॥

॥ आ न न्द प त्र मा न न्द वि

त्र मा स रु जा च तु वा न न्द ज र्म र वा २ प त्र मा वि त्र मा स न क्का दि त्र म हा स र्व

स र्ग म संप द पा पि ना॥

॥ प र्ठ ग आ ग व त्र मा धि त्र च क व र्ति म व र्म

२ नि र्म ल ह द या च क धा पि त अ हि नि सि क्क च न ज नु म य



साधना॥ ॥ हवक, कालचक्र, श्रीचक्रसम्वत्, अत्रक, कादि, सिद्धाया  
वंगक २, श्रीक, अदियानपू, उगि, विजात्रं, धत्री, परमहास, खजानक॥ ०







नमः श्रीवृगमलाकेश्वरदत्त १ नमामि १ श्रीनन्ददत्त स्वर्गमध्यामा नन्द  
दत्ता ॥ दशरुमिद्वारिभक्तलक्ष्मीदाया जगन्नाथ अरु यदाः

गा १ श्रीअमिताभमित्रांगकधविद्या, श्रीलाकेश्वरवरावटभगति ॥

ॐ ॥ वागललिङ्गं कुरु ॥ उर्वरासुवरा श्रीविष्णु, गन्धर्वा १ ॐ ॥

नीलशक्तिपिंगलकेश ॥ ॐ ॥ जगदन्कपक्रिया गुणदत्ता १

इष्टमात्रविष्णुनाशनीदत्ता ॥ ॥ वक्रनयनशिविन्दुवरा १



खर्जकत्रागिकपालनीलात्यत्रा॥

षर्षलीवादनसवाजाका॥

१ रुनयिअमाद्यवज्रचविनगीता॥

२ गभवमावसी॥ वज्रजागिनीहवडावाया २ शिरुवननाथदहिमपाषा

॥ ६६ ॥ पीवयिचमहावसमहासुखकविद्या २ वज्रदवीरुनि या

अनूरुवज्ञान॥

॥ दुर्धनावी शिदलकमलसंयाग २ दहिवि

॥ व्याघ्रचर्मवस्त्रपत्तालीदा २

॥ चवदासवनशीडशतावलीमाग

॥ ६६ ॥ २ वाग २



ॐ  
ॐ  
ॐ

नामयि पवनमं गदयि॥

वीज वाचूली॥

वसमूडा॥

वृ२ ईदा आलिंगल यागधवू॥

नाममं हूं हूं हूं॥

दहधवू॥

॥ ईजयि वपं वमहास ख २ पंचगियस

॥ गगयु वपसा दं वरुथं हिषक २ पालग्वनी सीसा

॥ ॐ ॥ २ वागनामकवि॥ हूं हूं दहधवू सीसाव न

॥ हवज उक्तना हूं हूं हूं २ ग

॥ सवनववन्दिग चवतववू २ कसमविलपनः

॥ शवविमकूट विरामगुल कूटायि २ नमः हूं नमः



ह्रीं श्रीं ह्रस्वजुष्टमगुलपषमि॥

॥ ॐ ॥ नागधनाशी

सयाजानामहामखदविद्या, वडभूतनददधन१ डिखवनसुवयि

महामखनाया, वन्दसूर्यशयिमि॥ ॥ नपाषाणिनानपूनवि

नाडिखवनचकमरूपी१ सर्वविकल्पविधिसनीदवी, अनरुवखनववइ

दायनी॥ ॥ अमिगारुमिचंगतधत्रीया, कल्यानत्रमिववूपधन१

कवमिखर्पत्रखदांगधत्री, परुखानववदायनी॥ ॥ दिग्विनामकूट



कर्मो वडिर्क दलकठि धत्री २ मखत्ररु विगल्लाचक (आरा) गी वरूडनवमि  
 वमाला ॥ ॥ सर्वगथा गगननी विवाहि न शावज्जरा वा २ गी व  
 ऊआ गिनी मित्रगगध्रिया गावन्ति ममत्रमवजा ॥ ॥ ६०३ ॥  
 रमागवसक ॥ अिनवत्रजन निपराखवमनि २ विवाय यिममत्रमं दंदा आ  
 लिंगा ॥ ६०४ ॥ निर्वसुहस्रवय ४१ गात्रसंपूर्ण २ गा-आलिंग  
 न आनन्दनयन ॥ ॥ चापयि संशागसयवधी मयन २ वागवित्रा



ॐ  
ॐ  
ॐ  
ॐ

गङ्गायि मा भ्य निषर्तु ॥

प्रप मुख दंडा आलिंगना ॥

षट्मासि ह्यनध्वनी आलिंगना ॥

अतसि कसू मयूति दह पला स्वना २ विविधित्व मनिम कूट विरुषि ना ॥

॥ ॐ ॥ नावयि कथी अचव वीवा २ मना वयि आनन्द विनामयि

अचवना ॥ ॥ यामदह व विम्व मूडा दर्शना २ पश्चा आलिंगना ॥

॥ अङ्ग कूलिग आग विमखना २ सूवन

॥ दहदिह सुवन श्री याग मन्वना २

॥ ॐ ॥ याग वसन्त ॥



पंचकपा

अथ महामहः॥  
गुरुर्गतिपाशः॥

॥ विवागवत्तु इति रुचर्यकवा १ तस्य निरुतवः  
॥ मावत्तु वदप्यनिखिलविप्रहृक्ता २ वविभक्ति

शगनगगगतविलासयि अचला॥

॥ ॐ ॥ १ वागमादि ॥

पंचकपालाध्वनिमोत्रा पंचरुतनपंचमूडा रुचल १ न वमित्रमाला गीवला  
रा व्याप चर्मकलिरुषिगत्रमना ॥ ५ ॥ ॐ ॐ ॐ कावसंजातवदना २ पर्व  
लम्बादव नीत्रसमदहा काध्वनिपणी महाकाला १ पंचामृतवसुदप्यनरुतयि



आशायनवक्रकपात्रधरा॥

॥ वक्रकपात्रा नितिनयना धात्ररुचं क

शीषमवदना १ उर्वरकलिना, पिंगलकेशा, उन्नरुक्ष्मा, कद्वलमया॥ ६

॥ कवतिकपात्रा, धात्रिखर्वांगनागरुच्यनागकुण्डलरात्रा १ नागप्रितमिः

द्वान्नीपूत्रनागम, अष्टनागमरुच्यसूरमरा॥

॥ जिनवत्रमोत्रीध

विषमगावृक्षमसन्ना, वक्रकवीवा १ पंगवृद्धा, गान्धवरावा, साख्यकलि

मा, अनुरुच्यवरा॥

॥ ॐ ॥ नागधनायी॥ गजमुखजि

वक्रकपात्र



अनन्यान्वदवदवन् नृणां धिपति गणेश्वरा १ मनिमूक वत्ता कवत्ता  
नृत्तिकिवनसंकाशा ॥ ६२ ॥ मात्रिया विश्व, मात्रिया दर्प, मात्रिया इ  
खविनाम नं १ मात्रिया मात्रा, मात्रसंकाशा, मन्वत्तपप्रइखना शिता ॥  
पेव सुवाना कूमव कस्वम शिष्टि पात्रदहि न कना १ मृगं वध्न नृखर्वा (ग, घ) पत्र  
कवत्तिक वा म ॥ ॥ विविज्वस्तु कंच कति वसा, जटा इ कूमलि मष्टि ना  
१ लं वाद न धृगल स्वादव (भा) रा, पायत्र मि वि मि वि वा ऊ म ॥ ॥ न



सर्वज्ञाय नमः

[illegible]



समस्तवक्त्ररूपं २ दक्षिणवात्रादि घनघात्रमूर्ति अंक्रमसहिगक्रयिषास  
ना ॥ वहीमनर्वाष्टिकादेवी धूमवर्षु कर्तिदंष्ट्रवर्णालि उमवृसहि  
गा २ अमृदिमका मात्रि, मयूरवाहन, वक्रलाक्रावर्षु मकिध्वनी ॥  
नेसखविष्ट्वी, गवृधुवाहन, गदावक्रसहिता, मयूरध्वनी २ वायव्यवाम, अ  
ध्वी, कंकाववदना, सिंहवाहन, खगध्वनी ॥ ॥ अष्टकूलनाग, म  
घनिम्यादिता, कंठपालनव, इगदिवी २ पलमासिद्वी, श्रीआवाधियाव, रुकि



रक्तवर्ण  
कोमल

मणुगिजस्यसिद्धिकवञ्ज॥

॥ ३०३ ॥

॥ स्वागगगध्वरुववी॥

कवर्णुगकमस्व. दिहुजवकवर्णुवनर्णु १५ हिनहुजगगहर्णु. महावीववर्णु

॥ ३०४ ॥ नमानि १० श्रीसीमसनपवमध्वर्णु १ वा महुजअणयमूडाधव

पत्यात्रीटा॥

॥ जगगसंसात्रलारुलपसादसिद्धिर्णु १ जगगस

भावांकासिद्धिरुलदहिमा॥

॥ पवपादवसहिर्णु. इण्णगीसुन्दरी

१ नृपत्रारुपूणुनायसुमवसुमनाहू॥

॥ मणुगुवचवलीववपसाद



॥ देम १ शावा शाव च व १ ॥ सीम वा ऊं न मा मि ॥

॥ यम माल गि वि लि न धी

व आ रु वा चार्थ १ अ म न प रा द व वि व चि न धी सी म गी क ॥

॥ ॐ ॥

१ वा ग माल ३ ॥ नि ऊ रु ३ अ ३ धू व हं व ३ वा या १ श्री रु न ग म न था गि नी प यि मं ॥

॥ धू ॥ आ न न्या दि दं वा क्क लि आ न न्या दि द वा १ प रि ना च कि हं व ३ म न सा र्थ

पू ३ ॥

॥ पू र्क सि न हि रु व र्वा नि ऊ रु ल हं व ३ १ म व रि अ न दा पि व

यि मं मा ष ॥

॥ श्री आ दि या न आ त्र यि च ॐ लि १ गी न अ न का कि व कि

ॐ  
ॐ  
ॐ  
ॐ

ॐ  
ॐ  
ॐ  
ॐ



वाऊकं॥

॥आलिकालिदयि पादध्वनकं २ कीउक्ति कामल कूलिग

वाऊकं॥

॥पयि सयि दामिनि अदय संथा (ग २ उचउ आगिनी ३

संगलगीगा॥

॥यस्म विद्याविश्वी वना वि २ वपन चउ स म हव ३

यीया॥

॥

ॐ

॥१ वाग गन्धान रेव वि॥ जिदवपम गुफ म गु ल

महासुखक विद्या २ दवी वरु विवा सिनी गत्व हान चक॥

॥पि

नयि व महा वम (गावू दहन १ स्वर्ग भाक मार्ग सत्व उद्या वनार्थ॥



वज्रवात्राहि अथ तत्र समय १ किं वन दवा सत्र नत्र दवी ॥ ॥ ५ ॥

जा प्रथ गुकारिषक १ अनुरुत्र क्रिया समुच्चय ॥ ॥ गुत्र पसाद न

इर्गतिना मन १ रुनयि कूल दल आचार्य च विना ॥ ॥ ६० ॥

राग नाटा क अनुरूप लाक मय क अनुरूप वृद्ध १ अखय निवृत्त न स यात्र विमु

क्त ॥ ॥ नाच यि अवध अकानकमान १ खर्चा गउ मत्र शीघ्र नत्र मित्र

माला ॥ ॥ अक सप्त निवृत्त न अकूल विहना १ अनुरुत्र धनग



प्रकृतम्

मिस्रयात्रविशुद्धि॥

॥ कुरुवात्ररुद्रवज्रकुरुवात्रविना २ अ॥

वधुआकाङ्कगमिस्रयात्रनयन्य॥

॥ हलकुरुलकुरुहमरुमंत्रसूक्तं

यं श्रुतिनिष्ठवननाथचक्रसंवत्त्रयाया॥

॥ ॐ ॥ वागनाट॥

सकत्रजगत्तुवसम्भववीना २ अनूपमकत्रलकविगमस्वचिह्ना ॥ ३

॥ सम्वत्त्रसम्भवकुरुमयिगापं २ विविधिविकल्पविनाशनवृक्षा ॥ ॥

दवीवावाहिदुष्कमलितदहा २ रुवुरुयवचनविभात्रविलिषा ॥ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सकलविघ्नहन्ति सतिपतिवृग्म १ प्रपतिस्वर्गनिवाशनवृद्धा ॥ १  
॥ सावासावशुगहिनवृग्म १ अनूपमसुखप्रसन्नसुखविः  
ला ॥ ॥ ॐ ॥ १ यागकनदि ॥ श्रीहवजनेनात्मा दवी तिरुव  
ननाथ १ पंचजिनव्यापित पंचवर्षुदहा ॥ ॥ नमामि १ श्री  
पुष्पागुपेय १ हवजगुक्थिनी वज्रगिनी भूयता ॥ ॥ पूर्व  
दिगस्मिन् रवव नीववर्षु १ दहिनपाय वारी वामविंद्रधना ॥



पञ्चमोऽङ्कः

घमनी वीरी यागिनी देवी २ गान्धर्वी लीला वज्ररूपा कावरी जागता ॥

ॐ ॥ १ वाग का भाद ॥ पञ्चलिङ्ग रूपा का वाङ्मय मन्त्रि ॥ ॐ स्त्री लका सप्त म  
दह २ विश्वरूपिणी कनक लं वल्लभ कूट आश्रयिणी ॥ ॐ ॥ नो मिथी पव  
पुत्री नं रुद्र सिंहा कनक लं २ विश्व नाथ तिरुवन व्यापिन वदा विधि मन कनकी ॥  
॥ ॥ अन्नक जान लिङ्ग तिरुवन वीर्य सर्वगी कृष्ण अदधन २ वासुदेव  
नी रुपा शिव रूपा विष्णु शिव न कनकी ॥ ॥ नाना वत्सा हावनी पवन



काटिभरवत्र लुपितददं २ दृष्टकलालं लीमसवदनं. तिरुवनवाया पवधुवीत्रं  
 ॥ वीवाधिप सर्वरायहवली ॥ एतदिमावादिमा कमानस १२२ नव  
 मकादि वान्दिनपादं सर्वसिद्धि माक रुलदं ॥ ॥ २२२ ॥ नागववादि  
 ॥ गतगतहाथ मा नामधुल वाया काटिहाथ मायादहा १ दकाटिहाथ मावा  
 आगिनीवृन्दयात्र वा लु विन कत्रदवा ॥ ॥ २३ ॥ उंकाट मधुलला लु विः  
 नात्र आगिनीवृन्दयात्र १ वज्रधामधनी क ॥ ४ ॥ आर्लिगल वा लु सकलसः



॥ ॥

साभ्यां॥ ॥पूर्वे च कचि क्रुमाय दक्षिणवत् विरुलियाय शपश्चिम  
पश्चिमकाय दक्षिणवत् विरुलियाय॥ ॥संपूठ यागरुवा ॥

पञ्चपकामत्र दुरुत्रवञ्जधाम्रियात्र॥

॥ संपूट आगरुत्रां ॥

निमित्तं स्वकटधत्रियात्र २ कायवाकचिरुमधुल्लासुत्रियात्र गगलकृ  
दियात्र ॥ ॥ वृषसवृषसवदगधत्रस्य ३ ठ्ठ्ठि मिलि याधर्मधु

दियाव॥

॥ नृपस नृपस वद ग-ध नृपस्य र्म हंति मिलि याध र्म धातु

हाथि २ कलु प्रा मधुल चय्यगावथ बाहिन पूजन हाथि॥

二 〇

१ वा ग विहास ॥ द्विरुज नकमुख नक व न व द न न न ग न न कू ट कभी निनि वा



॥ नमो देवी वृक्ष हाकिनी विम्बजननी १ शिरुवन व्यापिन

जिन शानदायनी ॥

॥ दहिन कत्र वज विनासिन दग्ध १ वाम कत्रा

वज्र मात्र भृगु पीवयी ॥

॥ कत्राणि मण्डल माया उदियात्र गमना १ वल

नोपत्र वत्र गमनं पवमिना ॥

॥ श्रीविद्याधरी देवी सूत्रनत्र साहिता १

सकत्राणि सिद्धिदहि ममागा ॥

॥ ॐ ॥ वाग शैव वी ॥ प

मादितादि दशरुमि सुन्दरी सन मन्त्र मण्डल संलिङ्ग लयना १ द्वादशरुज च



उवदनसु (महिना वजवावाहिक (४) आलिङ्गना ॥ ॥ रुं रुं द रु

दिहसु (ममात्रसयत्रसंवाधियात्र १ इंदर आलिङ्गना अद्वयसंरावनात्र  
यिमानं श्रीसन्वत्रयाया ॥ ॥ कलिगघ ४ गजवर्म शिखला कत्रगिउ

मन्त्रु (महिना १ मर्जपूत्रि कपात्र खद्वा (ग पाश पत्रसु वक्र शिवधवा ॥

॥ ॥ पंचकिन वत्रम कूट आलंशना षष्ठमूडारवक्ष विरूपिता १ आलि

चक्र १ यि आलि ८ वापयि वा घुचर्म निवासन शङ्क गन् ॥ ॥ नच



ॐ  
ॐ  
ॐ

॥ ग. व. सा. व. ज. र. व. धी. स. म. च. वा. दि. व. य. व. क. नि. मि. क. व. ल. हि. या. १. ज. न. म. ज. न. म. सा. व. ३.  
रू. पा. य. ग. व. ल. ग. म. व. नि. प. व. मा. दि. व. ज. गी. ता. ॥ ॥ ॐ ॥  
॥ वा. ग. ग. व. ल. गी. ॥ इ. वि. नि. म. य. व. व. वि. ला. ग. यि. क. यि. म. १. ड. थ. र. वा. शा. म. ३.  
ल. वा. या. ॥ ६. ॥ ॥ ग. र्ज. का. व. ह. म. य. ज. ग. ग. नि. वा. शि. या. य. ॥ १. ॥ अ. मि.  
य. ज. मि. य. नि. व. अ. न. वा. या. १. म. ह. ज. म. न्द. वी. या. कि. न. रू. व. प. यि. म. ॥ ४. ॥  
व. व. ड. आ. शि. नी. ए. ल. म. ल. १. व. क. वा. वा. हि. आ. लि. ग. ल. का. य. ॥ ५. ॥ ड. थ.



हरनाथकवलकदही २ जयजय श्रीगणेशाय नमः ॥ ६ ॥





अमीता  
रत्नसंभव



अक्षय



वज्रलोचन  
वज्रलोचन



अमिताभ  
अमीताभ



अमोघोद्योत  
अमोघोद्योत



























































